REVIEW OF RESEARCH

ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 3.8014 (UIF)
VOLUME - 6 | ISSUE - 5 | FEBRUARY – 2017

ग्रामिण कृषी पर्यटन एवं रोजगार के अवसर

प्रा. डॉ. वर्षा मनोहराव गंगणे
अर्थशास्त्र विभाग प्रमुख, मनोहरभाई पटेल कला-वाणिज्य-विज्ञान एवं स्नातकोत्तर महाविद्यालय, देवरी, जि. गोंदिया-

प्रस्तावना

इ.स. २०११ यह पर्यटन वर्ष धोषित किया गया और पर्यटन के अलग पहलू पर विचार करने की प्रेरणा प्राप्त हुई। पर्यटन यह एक व्यवसाय हो सकता है यह सर्वज्ञात था लेकिन कृषी के साथ पर्यटन व्यवसाय किया जा सकता है इस विषय पर कभी गंभीरता से सोचा नही गया था। शहरी क्षेत्रों में पर्यटन को अत्यंत महत्व दिया जाता है। छुट्टियों में अधिकतम शहरी लोग पर्यटन हेतू विभिन्न स्थानों पर धुमने जाते है। लेकिन यह केवल शहरी क्षेत्रों तक सिमित है । शहरों की तुलना में ग्रामिण क्षेत्रों में पर्यटन की संकल्पना को इतना महत्त्व प्राप्त नहीं है । शायद यह भी एक कारण है कि ग्रामिण क्षेत्रों की तुलना में शहरों का विकास अधिक हआ है। शहरी विकास के प्रमुख दो कारण बतलाए जा सकते है।

१) जनसंख्या वृद्धी को कारण शहरों का बढ़ते जाना.
२) रोजगार के अधिक अवसर होने से अर्थव्यवस्था का सुदृढ होना.

उपरोक्त दो प्रमुख कारणों के अलावा वर्तमान स्थीती में पर्यटन व्यवसाय में रूची एवं प्रधानता शहरों के विकास में सहायक होती दिखाई दे रहे है।

वर्तमान समय में ग्रामिण क्षेत्र अधिक उपेक्षित, उजडे एवं दिशाहिन होते नजर आ रहे है। गुवा गादीको खेती करने में कोई दिलचस्पी नही है। नौकरी की तलाश में वे शहरों की ओर पलायन कर रहे है । विकास की प्रक्रिया में खेती की भूमी बांध, बिजली प्रकल्प या नहरों में जाने से अनेक कृषक भूमीहिन हो। इसके अलावा मौसम का अनियमीत होना एवं खेती काम अलाभकारी होना इन सभी वजह से कृषी एक उपेक्षित क्षेत्र कहलाने जाने लगा है। कृषीक्षेत्र अधिक विकसित करने हेतू उसके साथ 'ग्रामिण कृषी पर्यटन' इस संकल्पना का विचार किया जाए तो कृषी एक अत्यंत फायदेमंद व्यवसाय साबित हो सकता है । कृषी के साथ-साथ पर्यटन व्यवसाय किया जाने से किसानों की कुल आमदनी में बढ़ोतरी होगी। जिसका उपयोग खेती उत्पादन बढोतरी करने के लिए किया जा सकता है। इससे किसानों को खेतीसे दुगनी आय प्राप्त हो सकती है।

ग्रमिण क्षेत्रों का सही मायने में विकास करने के लिये एक और कृषी को लाभकारक व्यवसाय बनाना अनिवार्य है और दुसरी ओर रोजगार के अधिकतम अवसर निर्माण करना अनिवार्य है। इसके फलस्वरुप ग्रामिण युवा पिढी का ग्रामिण क्षेत्रों से शहारो की ओर होनेवाले पलायन को रोका जा सकता है। खेती के

साथ-साथ किसानों ने पर्यटन व्यवसाय को अपनाया तो खेती के साथ कृषक और समूचा ग्रामिण क्षेत्र विकसीत होगा इसमें संदेह नही।

वर्तमान समय में पर्यटन यह व्यस्त जीवनशैलीसे निजात पाने का सर्वश्रेष्ठ माध्यम कहलाया जाता है। शहरों में रोज की भाग-दौड़ में व्यस्त रहने के कारण एवं गांव और पुरानी यादे जिंदगी से कोसों मील दूर रहने के कारण शहरी लोग ग्रामिण क्षेत्रों का चयन पर्यटन हेतू करना अधिक पसंद करते है। जहां शांती सुक्न, शुद्ध हवा, हरियाली एवं ताजा भोजन उपलब्ध हो। संक्षेप में कृषी ग्रामिण पर्यटन यह रोजगार के अवसर निर्माण करने में काफी हदतक मददगार साबित हो सकता है।

पर्यटन का अर्थ स्पष्ट करने के लिये पर्यटन की अभ्यासपूर्ण परिभाषा का अध्ययन करना आवश्यक होगा।

खुशी से परिपूर्ण समय बिताने के लिये, रोज की दिनचर्या से मुक्ती पाने के लिये एवं अपने परिवार जनों के साथ समय बिताने के लिये धर से कही दूर जाकर समय बिताने का अर्थ है पर्यटन ।

विश्व पर्यटन संधटना के अनुसार.

"Travel to stay in Places outside their usual environment for more than twenty four (24) hours & not more than one consective year for leisure, bussiness other purposes not related to the exercise of an activity remunerated from within the place visited - World Tourism Organization.

अत्यंत सरल शब्दों में पर्यटन का अर्थ खुशियोंभरे पल, आरामदायक सहज-सामान्य दिनों की दावत, परिवार की उत्तम सुविधा, उचित दरों में खाने-पिने और रहने का प्रबंध, सुरक्षित स्थान, नविनतम जानकारी का खजाना, अपेक्षित आतिशय, मीठी अविस्मरणिय यादों की पोटली ऐसा कहा जा सकता है।

पर्यटन स्थल उपरोक्त सुविधाओं से परिपूर्ण हो एवं अपनी निर्धारित बजटसीमा के अंदर आनेवाले हो तो पर्यटक उस स्थान का चुनाव करना पसंद करता है। पर्यटन हेतू वर्तमान में अनेक संस्था कार्यरत है जो संपूर्ण सुविधाएं उपलब्ध करवाती है। किंतु इनके द्वारा आकारा जाने वाला खर्च एवं अवधि ज्यादा होने के कारण यह सामान्य पर्यटकों में बहुत अधिक लोकप्रिय नही हो पा रहा है। इस कारण सामान्य जनता एवं उनकी क्षमता का विचार करते हुए लोगों को ग्रामिण पर्यटन में रची एवं ग्रामिण पर्यटन रोजगार के लाभकारी अवसर निर्माण करने में सहयोगी साबित होगा।

भारत यह कृषीप्रधान देश है। आज भी करीब ५० प्रतिशत लोगों के पास स्वयं की खेती है। लेकिन मात्र १० प्रतिशत किसान सधन है । ४० प्रतिशत किसान अत्यंत दयनिय अवस्था में जीवनयापन करते है। खेती के साथ-साथ पर्यटन व्यवसाय किया जाने से किसान को यह व्यवसाय उपलब्ध होकर आमदनी में बढोतरी होगी । किसानों में आत्मविश्वास की वृद्धी एवं उत्पन्न प्राप्त करने के नये साधनों की वृद्धी हो सकेगी। भारत यह प्रादेशिक भिन्नतावाला ऐसा देश है जहां एकही समय में अलग-अलग जलवायू एवं प्राकृतिक सौंदर्य से परिपूर्ण क्षेत्र दिखाई देते है । जिसका लाभ ग्रामिण पर्यटन क्षेत्र विकसित करने में सहाय्यक है।

वैश्विक स्तर पर पर्यटन उदयोग में भारत की क्रमवारी निम्न प्रकार से दर्शायी जा सकती है।

सूची क्र.१
भारतीय पर्यटन उदयोग की वैश्विक क्रमवारीता

क्र.	कार्यक्षेत्र सीमा	क्रमवारीता
१.	स्वयंसिद्ध प्रामण	१२
२.	राष्ट्रीय आर्थिक सहभाग	६०
३.	भविष्य में विकास	०४
४.	वर्ल्ड ट्रॅव्हल अँड टुरिझम कोसील. (डब्ल्यू.टी.टी.सी.)	–
५.	भारतीय पर्यटन उदयोग की वैश्विक स्थिती,	”
६.	आंतराष्ट्रीय पर्यटन में भारत का हिस्सा	०.५८
७.	विश्व के पर्यटक आने में भारत का क्रमांक.	४१
८.	भारत में आर्तराष्ट्रीय पर्यटकों का हिस्सा,	१.२४
६.	विश्व के पर्यटकोंसे प्राप्त आय में भारत का क्रमांक	२२

संदर्भ :- पर्यटन मंत्रालय रिपोट - २००६-२०१०

उपरोक्त सारणी में दर्शाए गये आकडों से यह स्पष्ट होता है कि, पर्यटन क्षेत्र का भविष्यमें विकास सं व कर भारत अपनी आर्थिक आय बढा सकता है। विश्व के विभिन्न क्षेत्रों से आनेवाले पर्यटकों की संख्या में वृद्धी हो रही है।

सूची क्र. २
पर्यटन क्षेत्र का कार्य.

क्र.	कार्यक्षेत्र	मुल्य
१.	भारत में आये हुए विदेशी पर्यटक,	५.११ मिलीयन
२	भारत से गये हुए भारतीय पर्यटक,	११.०७ मिलीयन
३.	देशांतर्गत पर्यटन-राज्य एवं केंद्रशासित प्रदेश.	६५०.०४ मिलीयन
४.	पर्यटन से विदेशी विनिमय की प्राप्ती.	५४६.०६ मिलीयन

संदर्भ :- पर्यटन मंत्रालय रिपोट. - २००६-२०१०

ग्रामिण क्षेत्रों में समुद्री किनारा उपलब्ध हो या समृद्री जलसे निर्मित झीले हो तो प्राकृतिक सौदर्य के कारण पर्यटक अधिक आकर्षित हो सकते है। प्रतिवर्ष भारत में ४० प्रतिशत विदेशी पर्यटक आते है । मुंबई और दिल्ली उनके प्रवेश द्वार है । इन पर्यटकों से पर्याप्त मात्रा में विदेशी चलन प्राप्त होता है । वर्तमान समय में अनेक शोधकर्ता अध्ययन हेतू ग्रामिण क्षेत्रों में आते है। इनमें विदेशी पर्यटक भी शामिल है । उनके निवास एवं आहार की उचित सुविधा होने से ग्रामिण क्षेत्रों में अधिक मात्रा में आर्थिक आवक हो सकती है । ग्रामिण एवं दुर्गम क्षेत्रों में प्रसिद्ध एवं प्रेक्षणिय स्थानो को र्प्यटन की दृष्टी से विकसित किया जाए तो वहा के ग्रामिण युवाओं का स्वयंरोजगार के अनेक अवसर प्राप्त हो सकते है। नविनतम स्थानों की जानकारी प्राथमिक सुविधाए, उत्कृष्ट निवास-व्यवस्था, समय पर धर में तयार किया गया भोजन मिलने से पर्यटक इन स्थानों की ओर सहज आकर्षित होंगे। इस मुद्दे को ध्यान में लेते हुए महाराष्ट्र शासन ने “न्याहारी आणि निवारा योजना” (Bread & Breakfast Scheme) लागू की है। इस योजना अंतर्गत किसानों को शासनद्धारा पर्यटन व्यवसाय हेतू कर्ज उपलब्ध कराया जाता है। किसान के खेत में कमसेकम २ एवं ज्यादा से ज्यादा ५ कमरे शौचालयोंके साथ बनाकर उनका M.T.D.C. “महाराष्ट्र पर्यटन विकास मडल”

अंतर्गत पंजीयन कराया जाता है। "महाराष्ट्र पर्यटन विकास मंडल" अंतर्गत पंजीयन कराया जाता है । यह कमरे M.T.D.C.के सौजन्यसे पर्यटकों को निवास हेतु किराया तत्व पर दिये जाते है। जिससे पर्यटकों को अत्यंत कम दारों में अच्छे एवं सुरक्षित निवास उपलब्ध हो जाते है। और किसान को अच्छी आमदानी होती है। महाराष्ट्र के कोकण क्षेत्र में इस योजना को भरपूर प्रतिसाद मिला है। इसतरह की योजनाएं प्रत्येक प्रदेश में शासन द्वारा चलायी जाए तो संपूर्ण भारत के कृषक अच्छी आर्थिक आय प्राप्त कर सकेंगे।

निवास व्यवस्था के साथ-साथ किसान के परिवार की महिलाएं उत्तम भोजन, चाय-नाश्ता, टिफिन, पार्सल आदि का प्रबंध करे तो यह स्त्रियों की आमदानी का अच्छा साधन हो सकता है। परिवार के युवा सदस्य पर्यटकों के लिये अच्छे पथप्रदर्शक (गाईड) साबित हो सकते हैं। जिससे उन्हे भी आमदानी प्राप्त होगी । संक्षेप में कृषक के समूचे परिवार को रोजगार के अवसर उपलब्ध होंगे जिससे कृपकों की कुल आमदानी बढ़कर ग्रामिण अर्थव्यवस्था सुदृढ होगी।

ग्रामिण कृषी पर्यटन को अधिक सफल बनाने हेतू कृषकों को निम्न बाते ध्यान में रखना अनिवार्य है।

१. कृषकों को अपने खेत सालभर फसलों से भरे (हरेभरे) रखने का प्रयास करना होगा। इसके लिये फसलें का उचित नियोजन करना अनिवार्य होगा।
२. खेतों में उगनेवाली फसलों पर आधारित विभिन्न पदार्थ पर्यटकों के सामने पेश करने होंगे जिससे ग्रामिण खादयसंस्कृती से पर्यटक अवगत हो सके एवं अलग स्वाद से पर्यटक संतुष्ट हो सके। उदा. के तौर पर महाराष्ट्र में भाजी- भाकरी-ठेचा, हुरडा-पार्टी, राजस्थान में दाल-बाटी, पंजाब में मक्के की रोटी-सरसों का साग तो समुद्री तट पर मछलियों के विभिन्न व्यंजन आदि.
३. पर्यटकों के मनोरंजन हेतू लोककला ग्राम संस्कृती पर आधारित कार्यक्रम, कृषीमेला, चर्चासत्र आदि का आयोजन किया जाए।
४. चांदनी रात में ग्रामपर्यटन, नदीकिनारों की सैर, मचानों से प्राणीदर्शन, धोडे एवं भैस की सवारी आदि का आयोजन किया जाए।
५. पर्यटकों को संबंधित क्षेत्रों का इतिहास, संस्कृती, जनजातीयों, जंगली पशु-पक्षी, कथा-कहानियों, रोचक धटनाएं, मार्गदर्शक निशान, आदिसे अवगत कराया जाए।
६. पर्यटकों से सौहार्दपूर्ण व्यवहार एवं उनकी जिज्ञासा को पूर्ण करने की क्षमता विकसित कर उन्हे संतुष्ट करने का प्रयास करना होगा।

उपरोक्त सभी बातों को ध्यान में रखते हुए किसानों ने खेती के साथ-साथ ग्रामिण पर्यटन को सह-व्यवसाय के स्वरूप में अपनाया तो देश में कृषक भी धनवान व्यक्ती कहलाने में समय नहीं लगेगा। कृषकों की दयनिय अवस्था में शासन सुधार लायेगा, मदत करेगा यह आशा करने में सालों बीत जाते है । लेकिन किसान की आर्थिक सामाजिक स्थीतीमें कोई सुधार नही आता अपितू कभी-कभी किसान आत्महत्या जैसा कदम उठा लेते है। कृषक एवं ग्रामिण परिजनों को अपने क्षेत्र में आर्थिक प्रगती हेतु स्वयं प्रयास करने होंगे। शिक्षित युवाओं को हिंमत से ग्रामिण पर्यटन व्यवसाय को स्विकारना होगा । स्वयं के खेत बेचकर शहरों में नौकरी की तलाश करने की अपेक्षा पर्यटन यह स्वयंरोजगार के तौर पर स्विकारना अधिक फायदेमंद और उपयुक्त होगा।

युवाओं को रोजगार के अवसर प्रदान करने की शहरों की क्षमता कुछ हद तक सिमीत है। किंतु खेती एक ऐसा व्यवसाय है जिसमे रोजगार के अवसर बड़े पैमाने पर उपलब्ध कराने की क्षमता शहारों की अपेक्षा अधिक है। इस मुद्दे पर विचार करते हुए यह बात ध्यान देने योग्य है कि, स्वयं की जमीन बेचकर शहरों में नौकरी ना मिले तो किसान एवं उसका परिवार सड़क पर आने की नौबत आ जायेगी । कृषक यदी उस जमीन पर थोडी खेती और साथ-साथ पर्यटन सवसाय करता है तो उसका पूरा परिवार भरपूर

आमदानी पा सकता है। और कई लोगों को रोजगार के अवसर प्रदान कर सकता है। इससे ग्रामअर्थव्यवस्था में सुधार आकर वह सुदृढ बनेगी. महात्मा गांधी ने वहाँ था "भारत का सही मायने में संपूर्ण विकास करना हो तो पहले गांव का विकास करना होगा।" इस विचार पर अमल करने का सही वक्त अब आ चुका है। युवाओं मे गांव की और लौटकर खेती एवं पर्यटन को व्यवसाय स्वरुप अपनाया तो रोजगार के अवसर अपने आप हर बार पर दस्तक देंगे । गाँव समृध्दी एवं खुशहाली की ओर कदम बढाएगा । युवाओं में अपना संधठन बना कर नये प्रेक्षणिय क्षेत्रो की खोज, उनका प्रचार, खेती की प्रकिया का प्रात्यक्षिक कर दिखाना आदि संबधि जानकारी इकठी करनी होगी। इससे युवाओं को रोजगार की तलाश में शहर जाने की जरूरत नहीं होगी अब शहर ग्रामिण पर्यटन हेतु गांवो में आने लगेंगे।

बस्स..... थोडी मेहनत, विश्वास और आशावादी होने की जरुरत है।

संदर्भः

१. पर्यटन मंत्रालय रिपोर्ट – २००६– २०१०
२. योजना' – सप्टेंबर – २०११
३. साप्ताहिक सकाळ – सप्टेंबर – २०११